स्पेशल : इंटरनेशनल म्यूजियम-डे, 18 मई

जानकारी / शिखर चंद जैन

भारत के प्रसिद्ध म्यूजियम्स
यहां संग्रहीत हैं अनोखी वस्तुएं

बच्चो, म्यूजियम यानी संग्रहालय ऐसी जगह होती है, जहां कला, संस्कृति, इतिहास और विज्ञान से जुड़ी दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह देखने को मिलता है। इन्हें देखकर ज्ञानवर्धक जानकारियां तो मिलती ही हैं, साथ ही अनोखे अनुभव भी मिलते हैं। जानो, देश के कुछ म्यूजियम्स के बारे में कि ये किन विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध हैं।

वीएमआरडीए आईएनएस कुरसुरा पनडुब्बी संग्रहालय विशाखापत्तनम

भारतीय नौसेना (इंडियन नेवी) की नॉन-एक्टिव सबमरीन (सेवामुक्त हो चुकी पनडुब्बी) आईएनएस कुरसुरा में यह संग्रहालय स्थित है। यह संग्रहालय, भारत के नौसैनिक इतिहास और समुद्री विरासत के बारे में जानकारी देता है। यहां तुम पनडुब्बी के चेंबर्स, कंट्रोल रूम और लिविंग रूम्स को विजिट कर सकते हो। साथ ही तुम पनडुब्बी चालकों (सबमरीन ड्राइवर्स) की लाइफस्टाइल के बारे में भी जान सकते हो। *

डॉन बॉस्को स्वदेशी संस्कृति म्यूजियम शिलांग

इस म्यूजियम में पूर्वोत्तर भारत की विविध स्वदेशी संस्कृतियां, आदिवासी परंपराएं, कला और शिल्प से जुड़ी सामग्री देखने को

मिलती हैं। यहां तुम आदिवासियों के झोपड़ी जैसी कलाकृतियों के साथ-साथ उनके पारंपरिक वेशभूषा, संगीत, वाद्ययंत्रों के अलावा आदिवासियों के रहन-सहन और उनकी संस्कृति से जुड़ी कई आकर्षक और आश्चर्यजनक चीजें देख सकते हो। इसके अलावा, यहां एक स्काईवॉक की भी व्यवस्था है, जहां से तुम्हें इस म्यूजियम और शिलांग के अद्भुत नजारे देखने को मिलेंगे। *

हेरिटेज ट्रांसपोर्ट म्यूजियम गुरुग्राम

परिवहन यानी ट्रांसपोर्ट हमारी डेली लाइफ का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हरियाणा के गुरुग्राम स्थित इस म्यूजियम में तुम इंडियन ट्रांसपोर्ट सिस्टम के अलग-अलग दौर में इस्तेमाल में आने वाले एंटीक व्हीकल्स देख सकते हो। इस म्यूजियम में पुरानी कारों, मोटरसाइकिलों, रेलवे कोचों, विमानों और परिवहन के अन्य साधनों के संग्रह हैं। बच्चो, तुम यहां इंटरैक्टिव प्रदर्शनियों, मल्टीमीडिया डिस्प्ले के माध्यम से ट्रांसपोर्ट टेक्नोलॉजी के विकास के साथ-साथ समाज और संस्कृति पर इसके प्रभाव को भी जान-समझ सकते हो। *

सालार जंग म्यूजियम हैदराबाद

मीर यूसुफ अली खान, जिन्हें सालार जंग तृतीय के नाम से भी जाना जाता है, हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली के कार्यकाल में प्रधानमंत्री रहे थे। मीर यूसुफ को दुर्लभ वस्तुएं, कलाकृतियां, पांडुलिपि आदि इकट्ठा करने का शौक था। उनके पश्चात उनके परिवार और अगली पीढ़ियों द्वारा भी इस म्यूजियम के लिए कलाकृतियों एवं अन्य वस्तुओं का संग्रह किया जाता रहा। आज इस संग्रहालय में एक मिलियन यानी दस लाख से अधिक कलाकृतियां और अन्य संग्रहणीय सामग्रियां रखी हुई हैं। *

शंकर अंतरराष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय नई दिल्ली

इस म्यूजियम की स्थापना 1965 में फेमस कार्टूनिस्ट शंकर पिल्लई ने की थी। खास बात यह है कि इस म्यूजियम में दुनिया के किसी भी अन्य डॉल म्यूजियम से ज्यादा कॉस्ट्यूम डॉल्स हैं। इस म्यूजियम में लगभग 85 देशों से इकट्ठी की गई 6,500 से अधिक डॉल्स तुम्हें देखने को मिलेंगी। इन डॉल्स की बनावट, पारंपरिक पोशाक और सांस्कृतिक महत्व को देखकर-जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा। *

इंडियन म्यूजियम कोलकाता

पश्चिम बंगाल के कोलकाता में स्थित इंडियन म्यूजियम, देश का सबसे बड़ा म्यूजियम है। इसे स्थानीय लोग अजायबघर या जादूघर भी कहते हैं। 1814 में बना यह म्यूजियम भारत का सबसे पुराना म्यूजियम है। यहां कई कलाकृतियां तो 2000 साल पुरानी हैं। यहां प्रागैतिहासिक काल के भारत के सांस्कृतिक इतिहास को समेटा गया है। इंडियन म्यूजियम में कई खंडों में विविध विषयों, जैसे-इतिहास, कला, पुरातत्व, जंतु शास्त्र, वनस्पति शास्त्र एवं अन्य कई विषयों से जुड़ी सामग्रियां देखी जा सकती हैं। इस म्यूजियम में सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेष से लेकर मिस्र की ममीज तक देखी जा सकती हैं।

स्पेशल : इंटरनेशल ड्रॉइंग-डे

ड्रॉइंग करने से बढ़ेगी क्रिएटिविटी इंप्रूव होगी पर्सनालिटी

बच्चो, तुमको चित्र बनाकर उसमें मनचाहे रंग भरने में बहुत मजा आता होगा, है न! क्या तुम जानते हो, ड्रॉइंग करने की शुरुआत कब हुई और इससे क्या-क्या फायदे होते हैं? आज ड्रॉइंग-डे के अवसर तुम्हें बता रहे हैं, इससे जुड़ी रोचक बातें।

क्रिएटिव आर्ट

कुमार गौरव अजीतेंदु

बच्चो, चित्रकारी यानी ड्रॉइंग एक बहुत रोचक आर्ट है। बच्चे ही नहीं कई बड़ी उम्र के लोगों को भी इसमें काफी इंटरेस्ट होता है। कई लोग तो ड्रॉइंग को ही अपना करियर बना लेते हैं और इसके जरिए खूब नेम-फेम पाते हैं। ड्रॉइंग के महत्व को लोगों को बताने के लिए ही प्रत्येक वर्ष 16 मई (आज के दिन) को 'अंतरराष्ट्रीय चित्रकारी दिवस' या 'इंटरनेशनल ड्रॉइंग डे' के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया गया पहला ड्रॉइंग-डे: साल 2008 में दुनिया भर में पहली बार 'इंटरनेशनल ड्रॉइंग-डे' मनाया गया था। इस अवसर पर ड्रॉइंग के फील्ड से जुड़े लोगों को अपनी क्रिएटिविटी, अपने आर्ट को ऑनलाइन शेयर करने के लिए इनवाइट किया जाता है। साथ ही ड्रॉइंग से होने वाले लाभों से अवगत कराने और ड्रॉइंग में लोगों की रुचि जगाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है।

होते हैं अनेक फायदे: ड्रॉइंग के माध्यम से तुम अपनी इमेजिनेशन, अपनी नॉलेज और क्रिएटिविटी को अधिक प्रभावी ढंग से एक्सप्रेस कर सकते हो। इससे तुम्हारी इमेजिनेशन और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल इंप्रूव होती हैं। इसके अलावा भी ड्रॉइंग के कई फायदे होते हैं, जैसे-

मिलती है हैप्पीनेस: ड्रॉइंग करते समय मन शांत और एकाग्रचित्त होता है। इसलिए जब तुम ड्रॉइंग करते हो, तब टेंशनफ्री और हैप्पी रहते हो।

बढ़ता है कॉन्फिडेंस: जब तुम अपनी इमेजिनेशन से कोई अच्छी ड्रॉइंग बनाते हो, तो इससे तुम्हारा कॉन्फिडेंस बढ़ता है।

फीलिंग्स एक्सप्रेशन का तरीका: ड्रॉइंग के जरिए तुम अपनी हर फीलिंग को बेहतर ढंग से एक्सप्रेस कर सकते हो। इससे तुम्हें सेल्फ-सैटिस्फेक्शन मिलता है।

स्ट्रेस होता है दूर: कई शारीरिक-मानसिक रोगों के ट्रीटमेंट में ड्रॉइंग एक थेरेपी के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। इससे टेंशन और स्ट्रेस दूर होता है, मानसिक सुकून मिलता है।

ऐसे मनाओ ड्रॉइंग डे: तुम चाहो तो अपने फ्रेंड्स के साथ मिलकर ड्रॉइंग-डे को स्पेशल तरीके से सेलिब्रेट कर सकते हो। इसके लिए तुम सब कोई एक थीम सेलेक्ट कर लो फिर एक निश्चित समय में उस थीम पर बेस्ड ड्रॉइंग बनाओ। इस कॉम्पिटिशन में किसकी ड्रॉइंग बेस्ट है, इसका डिसीजन करने के लिए अपने आर्ट टीचर या आस-पड़ोस के अंकल की हेल्प ले सकते हो, जिन्हें ड्रॉइंग में इंटरेस्ट हो। *

ड्रॉइंग से जुड़े कुछ फैक्ट्स

- इंसानों ने अब से लगभग 30,000 वर्ष पहले चित्र बनाना शुरू कर दिया था।
- 1797 में निकोलस-जैक्स कोंटे ने पेंसिल का आविष्कार किया, इससे चित्र बनाना आसान हो गया।
- अधिकांश चित्र सरल ज्यामितीय आकृतियों जैसे वृत्त, वर्ग और त्रिभुज से शुरू होते हैं।
- प्राचीन काल में लोग कहानियां सुनाने या जानकारी साझा करने के लिए गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाते थे।
- प्राचीन मिस्रवासी चित्रकला को लेखन के के रूप में प्रयोग करते थे, जिसे 'हाइरोग्लाइफिक्स' कहा जाता था।
- 1984 में पहला मैकिंटोश कंप्यूटर तैयार किया गया, जिसमें पेंट प्रोग्राम 'मैकपेंट' था, जिसने डिजिटल ड्रॉइंग और डिजाइन की नई सुविधाएं मिलीं।

तुम्हारे लिए नई किताब / चंद्रप्रकाश

आस-पास की कहानियां

जैसा कि इस किताब के नाम (बारह सौ की बाटी और अन्य किस्से) से ही पता चलता है यह 'किस्सों' की किताब है। इसे पढ़ते हुए पता चलता है कि किताब के सभी चौदह 'किस्से' हमारे आस-पास घटने वाली छोटी-छोटी घटनाएं हैं। तरह-तरह की 'बातें' हैं, जो ध्यान से देखने पर हमें चौंकाती हैं।

किताब में दिए इन किस्सों के विभिन्न चरित्र कुछ जाने-पहचाने से दिखते हैं- बहुत साधारण, सीधे-सादे और अपने में मस्त। लेकिन उनकी अपनी कुछ खास आदतें, सनक या कहें किसी काम को करने की धुन, जिन्हें लेखक जिस अंदाज में हमारे बीच रखता है, ये अपने आप में अनोखा बना देती हैं। इन किस्सों के साथ दिए किताब के रंग-बिरंगे वाटर-कलर से बने चित्र सामान्य चित्रों से अलग और सुंदर दिखते हैं। *

किताब: बारह सौ की बाटी और अन्य किस्से, **लेखक:** शिवनारायण गौर, **चित्रकार:** नीलेश गहलोत, **मूल्य:** 80 रुपए, **प्रकाशक:** एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल

बूझो तो जानें

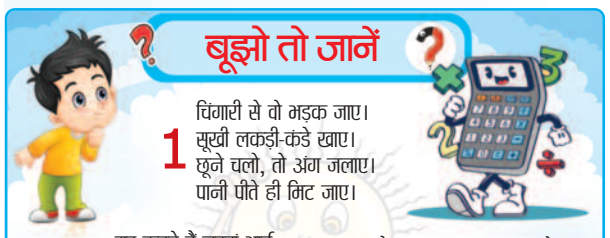

1 चिंगारी से वो भड़क जाए।
सूखी लकड़ी-कंडे खाए।
छूने चलो, तो अंग जलाए।
पानी पीते ही मिट जाए।

2 सब कहते है जुड़वां भाई
पैरों में ही जगह है पायी।
कहीं एक साथी खो जाए
दूजा कोई काम न आए।

3 जोड़, घटाना, गुणा, भाग है
मेरे बाएं हाथ का काम।
कभी नहीं गलती करता हूं
मित्र! बताओ मेरा नाम।

- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

उत्तर : 1.आग, 2.जूते, 3. कैलकुलेटर

जीके क्विज-154

1. हाल में किस प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेटर ने टेस्ट मैच से संन्यास लेने की घोषणा की?
2. 72वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का आयोजन कहां किया जा रहा है?
3. इसरो के वर्तमान अध्यक्ष कौन हैं?
4. भारत और पाकिस्तान के बीच की सीमा रेखा को किस नाम से जाना जाता है?
5. ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कहां है?
6. सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को उनके पद की शपथ कौन दिलवाता है?
7. विश्व की सबसे बड़ी झील कौन-सी है?
8. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?
9. दुनिया में सबसे अधिक रबड़ का उत्पादन किस देश में होता है?
10. नियाग्रा जलप्रपात किन दो देशों की सीमा पर स्थित है?

बच्चो, जीके क्विज-154 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-153 का उत्तर : 1.स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट, 2.मंगूभाई छगनभाई पटेल, 3.वायुसेना उपप्रमुख, 4.15 मई, 5.ग्यारह, 6.रानी लक्ष्मीबाई, 7.बुध, 8.लियोनार्दो द विंची, 9.नाइट्रस ऑक्साइड, 10.राजस्थान

जीके क्विज-153 का सही उत्तर देने वाले : साकेत-दुर्ग, कबीर-हिसार, प्रज्ञा-रायपुर, मुस्कान-कोंडागांव, रमेश-कोरबा, सौरभ-बिलासपुर, कमल-महेंद्रगढ़, अमन-रोहतक, कशिश-महासमुंद, रोशन-दुर्ग, गुंजन-भोपाल, जतिन-रायगढ़

कहानी / क्षमा शर्मा

स्कूल में गर्मी की छुट्टियां क्या हुईं, मिनी का घर से निकलना बंद हो गया। घर में यही कहा जाता-बाहर धूप तगड़ी है, लू लग जाएगी। बेचारी मिनी करे तो क्या करे? तुम्हारे लिए बहुत प्यारी-सी कहानी।

मिनी की परेशानी

मिनी की छुट्टियां क्या हुईं, सवेरे से ही सब उसे पुकारने लगते, 'मिनी, जल्दी उठो। फ्रेश होओ। ब्रश करो। दूध पिओ, फिर नीचे खेलने जाओ।' दादी कहतीं, 'नहीं मिनी, बाहर तो अभी से इतनी तेज धूप है। देख रही हो न कि पेड़-पौधे भी धूप से कैसी हाय-हाय कर रहे हैं। कहीं मत जाओ। जो खेलना हो, घर के अंदर खेलो। और बाहर जाओ भी तो पेट भरकर पानी पीकर, फिर लू नहीं लगेगी।'

'लो जी, पेट भरकर पानी ही पी लेगी तो दूध कैसे पिएगी, नाश्ता कैसे करेगी?' मम्मी, दादी से शिकायत करती-सी पूछतीं। बेचारी मिनी, मम्मी की सुने कि दादी की।

तभी भइया अंदर वाले कमरे से चिल्लाता, 'मेरे जूते नहीं मिल रहे हैं। जरूर इस मिनी ने ही इधर-उधर किए होंगे। इसे जूतों से फुटबॉल खेलने की आदत जो है।'

मिनी धीरे से बोली, 'तो ला दो न एक अच्छी-सी फुटबाल, नहीं खेलूंगी फिर जूतों से। पता है, कभी नहीं लाएगा। कंजूसड़ा कहीं का। जब देखो तब मुझसे ही पैसे मांगता रहता है।' वैसे तो बात यह है कि उसने जूते कहीं इधर-उधर नहीं किए थे। मिनी मन ही मन सोचती है, 'इसी ने कहीं इधर-उधर उतारे होंगे। जहां भी कुछ रखता है, कभी याद नहीं रहता है इसे। कभी पेन, कभी चाबी, कभी पासवर्ड हमेशा कुछ न कुछ भूला या खोया रहता है इसका और नाम लगा रहा है मेरा। हुंह... इससे तो अच्छी थी कि स्कूल ही जाती।'

'अरे मिनी, यह अपने से ही क्या बातें कर रही है?' पापा ने जाते-जाते पूछा तो वह तकिए में मुंह छिपाती बोली, 'कुछ नहीं पापा, पोयम याद कर रही थी।'

'अच्छा भई हम भी तो सुनें तुम्हारी पोयम।' पापा पलंग के पास आकर बैठ गए तो मिनी ने ऐसे दिखाया जैसे वह सो रही हो और सपने में ही पापा की बात का जवाब दिया हो। पापा ने मान भी लिया, 'अरे, लड़की तो सो रही है अभी। चलो, सोने दो। नहीं तो बेचारी हर रोज सुबह उठती है। सवेरे की उठी-उठी रात को सो पाती है। बच्चों को भी बड़ों की तरह बस रात-दिन काम ही काम है।' जब भइया चला गया, पापा दफ्तर के लिए निकले, उसने कार स्टार्ट करने की आवाज सुन ली और उसके कुछ देर बाद मम्मी शालू आंटी से मिलने चली गईं और दादी पूजा करने लगीं। अब पूजा भी तो पूरे दो घंटे की। मिनी को लगा कि अब बस दो घंटे तक कोई उससे यह नहीं कहेगा, 'अरे मिनी, यह क्या कर दिया, वह क्या कर दिया, यह लड़की तो किसी की नहीं सुनती है, टीचर से कहना पड़ेगा। कल ही तो इतनी महंगी डॉल दिलवा कर लाए थे और आज उसके बाल उखाड़ दिए।' ओह डॉल से अच्छा याद आया, मिनी को तो आज उसकी आंख ठीक करनी थी। कितने तो काम थे। मिनी ने फौरन खिलौनों की अलमारी खोली और सोचने लगी कि कैसे आंख ठीक करे? उसकी नीली आंख अंदर चली गई थी। भइया ने नीले बॉल प्वॉइंट से उसे बाहर निकालने की कोशिश की तो वह और अंदर घुस गई। पूरी आंख पर नीला रंग फैल गया। भइया तो गुड़िया को फेंक कर चला गया। अब एक आंख की गुड़िया उसे अच्छी नहीं लगती। तो उसे याद आया कि उसके टॉमी कैट की आंखें भी तो नीली हैं। उसने टॉमी को अलमारी से बाहर निकाला। फिर सोचने लगी, 'अगर इसकी एक आंख डॉल को लगा भी दूं तो फिर इसके लिए दूसरी आंख कहां से लाऊंगी?'

मिनी ने सोचा दादी से पूछे लेकिन वह तो पूजा कर रही थीं। तो फिर किससे पूछे? उसने शालू आंटी के यहां गईं मम्मी को फोन किया। मम्मी बिगड़ गईं, 'क्या मिनी, कभी चैन से नहीं रहने देती। अब तू अपनी गुड़िया का किस्सा ले बैठी। घर आकर करती हूं बात।' 'लो मम्मी खुद तो चली गईं और मुझे धूप का बहाना बनाकर दादी ने नीचे पार्क में भी खेलने नहीं जाने दिया। क्या बड़ों को धूप नहीं लगती?' मिनी बुदबुदाई।

मिनी ने डॉल को फिर से अलमारी में रखा। मम्मी लौटेंगी तो उनसे उसकी आंख ठीक कराएगी, फिर बालकनी में जाकर बाहर देखने लगी। पार्क में एक मैना घास से बीन कर कुछ खा रही थी कि एक गिलहरी उसके पीछे दौड़ी। मैना डर से दूर भाग गई तो गिलहरी वहां खाने लगी। पता नहीं वह क्या खा रही थी। मैना ने फिर उधर कदम बढ़ाया तो इस बार दो गिलहरियों ने उसका पीछा किया। मिनी को इस खेल में बहुत मजा आया। लगा जैसे कि गिलहरी और मैना छुआ-छुई का खेल खेल रही हों। तभी टॉमी कैट जैसा एक बिल्ला एक गौरैय्या की तरफ दबे पांव बढ़ा। मिनी जोर से चिल्लाई, 'भागो-भागो..!' और तालियां बजाने लगी। ताली की आवाज से गौरैय्या उड़ गई। दोनों गिलहरियां भाग गईं और बिल्ला देखता रह गया। उसके शिकार जो हाथ से निकल गए थे। तभी दादी ने आकर पूछा, 'किसे भगा रही थी मिनी?' उसके मुंह से निकला, 'टॉमी कैट को।'

'टामी कैट को! क्या तूने अपना बिल्ला भी डॉल की तरह तोड़कर खराब कर दिया और बाहर फेंक दिया? कितना नुकसान करती है री लड़की।' कहती हुई दादी तो तुलसी को पानी देने लगीं। मिनी ने उनकी नकल उतारी, 'कितना नुकसान करती है री लड़की!' और वहां से भाग गई। दादी पुकारती ही रह गईं, 'मिनी, ओ मिनी, कहां भाग गई, बाहर मत जाना बहुत धूप है..।'

'हां दादी, अब सवेरे से शाम तक पुकारो मुझे। पता नहीं ये छुट्टियां आती ही क्यों हैं?' मिनी भुनभुनाई। *

कविता

घमंडीलाल अग्रवाल

गरमी की अगवानी

भैया, दीदी, नाना, नानी-
करते गरमी की अगवानी।
उठा हाथ तेरे स्वागत में
ट्विस्ट कर रहे सूती कपड़े,
पतला कुर्ता, धोती पतली
गुन-गुन गीत गा रहे अकड़े,
जेल गए अब गर्म वस्त्र सब-
खूब दिखा अपनी मनमानी।
खरबूजों की, तरबूजों की
फसल तीव्र गति से मुस्काती,
आड़ू, जामुन, आम, लीचियां
बने हुए हैं प्यारे साथी,
'मुझसे करो दोस्ती पक्की'-
कहता ठंडा-ठंडा पानी।
खड़ी हुई-बांहें फैला,
कुल्फी और बर्फ की सिल्ली,
आओ खेलें मिलकर सारे
खेल अनोखा डंडा-गिल्ली,
शीतल पेय छेड़ने बैठे-
धुन प्यारी जानी-पहचानी।

रंग भरो-175

रंग भरो-175 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

दिव्यांश, दुर्ग

रितेश, मटियारी

श्वेता, रायपुर

रशिका, जांजगीर

दीप्या, अहिवारा

भाविका, सरोरा

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

आस्तिका-चांपा, भावी-धमतरी, चहक-कोसली, डिपल-दुर्ग, गौरांग-रायपुर, पलक-धमतरी, परिधि-ईमेल से, सान्वी-अंबिकापुर, तेजस-सरोरा, कविता-कटनी, हितेश-दिल्ली, राकेश-धमतरी, अंकित-गुना, दिनेश-करनाल, विक्की-बिलासपुरा

रंग भरो 176

बच्चो, यहां ड्रॉइंग बनाती हुई लड़की का एक ब्लैक एंड व्हाइट चित्र दिया गया है। तुम इस चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम बालभूमि में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो- संपादक - फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली- 110035 या ई-मेल आईडी balbhoomihb @gmail.com पर मेल करो।